श्री विष्णु सहस्रनाम

भगवान विष्णु के सहस्रनाम की व्याख्या

भाग - 9

व्याख्याकार

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त आश्रम प्रकाशन

www.vmission.org.in

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

इस पुस्तिका में भगवान विष्णु के
801 से 900 नाम तक की व्याख्या उपलब्ध है।

801. ॐ अक्षोभ्याय
802. ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय
803. ॐ महाह्रदाय
804. ॐ महागर्ताय
805. ॐ महाभूताय
806. ॐ महानिधये
807. ॐ कुमुदाय
808. ॐ कुन्दराय
809. ॐ कुन्दाय
810. ॐ पर्जन्याय
811. ॐ पावनाय
812. ॐ अनिलाय
813. ॐ अमृताशाय
814. ॐ अमृतवपुषे
815. ॐ सर्वज्ञाय
816. ॐ सर्वतोमुखाय
817. ॐ सुलभाय
818. ॐ सुव्रताय
819. ॐ सिद्धाय
820. ॐ शत्रुजिते
821. ॐ शत्रुतापनाय
822. ॐ न्यग्रोधाय
823. ॐ उदुम्बराय
824. ॐ अश्वत्थाय
825. ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय
826. ॐ सहस्रार्चिषे
827. ॐ सप्तजिह्वाय
828. ॐ सप्तैधसे
829. ॐ सप्तवाहनाय
830. ॐ अमूर्तये
831. ॐ अनघाय
832. ॐ अचिन्त्याय
833. ॐ भयकृते
834. ॐ भयनाशनाय
835. ॐ अणवे
836. ॐ बृहते
837. ॐ कृशाय
838. ॐ स्थूलाय
839. ॐ गुणभृते
840. ॐ निर्गुणाय
841. ॐ महते
842. ॐ अधृताय
843. ॐ स्वधृताय
844. ॐ स्वास्याय
845. ॐ प्राग्वंशाय
846. ॐ वंशवर्धनाय

ॐ

847. ॐ भारभृते नमः
848. ॐ कथिताय
849. ॐ योगिने
850. ॐ योगीशाय
851. ॐ सर्वकामदाय
852. ॐ आश्रमाय
853. ॐ श्रमणाय
854. ॐ क्षामाय
855. ॐ सुपर्णाय
856. ॐ वायुवाहनाय
857. ॐ धनुर्धराय
858. ॐ धनुर्वेदाय
859. ॐ दण्डाय
860. ॐ दमयित्रे
861. ॐ दमाय
862. ॐ अपराजिताय
863. ॐ सर्वसहाय
864. ॐ नियन्त्रे
865. ॐ अनियमाय
866. ॐ अयमाय
867. ॐ सत्यवते
868. ॐ सात्त्विकाय
869. ॐ सत्याय
870. ॐ सत्यधर्मपरायणाय
871. ॐ अभिप्रायाय
872. ॐ प्रियार्हाय
873. ॐ अर्हाय
874. ॐ प्रियकृते
875. ॐ प्रीतिवर्धनाय
876. ॐ विहायसगतये
877. ॐ ज्योतिषे
878. ॐ सुरुचये
879. ॐ हुतभुजे
880. ॐ विभवे
881. ॐ रवये
882. ॐ विरोचनाय
883. ॐ सूर्याय
884. ॐ सवित्रे
885. ॐ रविलोचनाय
886. ॐ अनन्ताय
887. ॐ हुतभुजे
888. ॐ भोक्त्रे
889. ॐ सुखदाय
890. ॐ नैकजाय
891. ॐ अग्रजाय
892. ॐ अनिर्विण्णाय
893. ॐ सदामर्षिणे
894. ॐ लोकाधिष्ठानाय
895. ॐ अद्भुताय
896. ॐ सनाते
897. ॐ सनातनतमाय
898. ॐ कपिलाय
899. ॐ कपये
900. ॐ अप्ययाय नमः

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८०१ -

ॐ अक्षोभ्याय नमः

अक्षुब्ध परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Unruffled.

रागद्वेषादिभिः शब्दादिविषयैश्च त्रिदशारिभिश्च न क्षोभ्यते इति अक्षोभ्यः अर्थात् राग-द्वेषादि से, शब्दादि विषयों और देवशत्रुओं से क्षुब्ध नहीं होते, इसलिए वे अक्षोभ्य हैं। एक जीव जो बाह्य शत्रु तथा आन्तरिक राग-द्वेषादि रूप शत्रु से क्षुब्ध होकर बहिर्मुख होकर जीता है, क्योंकि उसका निश्चय है कि सुख-दुःख बाहर तथा अन्य से प्राप्त होते हैं। किन्तु परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप होने से उन सब से अप्रभावित रहते हैं, इसलिए वे अक्षोभ्य कहलाते हैं। उन सदैव अक्षुब्ध रहनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८०२ -

ॐ सर्ववागीश्वराय नमः

वाणी के स्वामी को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of Eloquence.

सर्वेषां वागीश्वराणां ब्रह्मादीनामपि ईश्वरः इति सर्ववागीश्वरेश्वरः अर्थात् ब्रह्मादि समस्त वागीश्वरों के भी ईश्वर हैं, इसलिए सर्ववागीश्वरेश्वर हैं। जगत्सृष्टा ब्रह्माजी समस्त वांग्मय के स्रोत हैं। उन्हींसे वेदमयी वाणी प्रकट हुई है। किन्तु ब्रह्माजी को भी परमात्मा ही चेतनवान करते हैं, इसलिए वे वेदमयी वाणी को व्यक्त करने के निमित्त बने हुए हैं। इसके अलावा जिह्वा में बोलने का सामर्थ्य वाणी के अधिष्ठातृ देवता अग्नि की वजह से होता है। वह भी परमात्मा से ही अनुगृहीत होकर समर्थ होती हैं। इसलिए परमात्मा सर्ववागीश्वर हैं। उन सब वागीश में श्रेष्ठ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
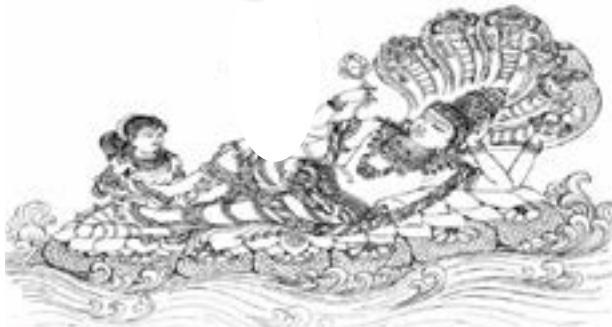
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८०३ -

ॐ महाह्रदे नमः

आनन्दस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Large Reservoir of Bliss.

अवगाह्य तदानन्दं विश्रम्य सुखमासते योगिनः इति महाह्रद इव महाह्रदः अर्थात् उन आनन्दस्वरूप परमात्मा में गोता लगाकर योगिजन विश्रान्त होकर सुख में बैठते हैं, इसलिए वे एक बड़े सरोवर के समान महाह्रद कहलाते हैं। परमात्मा आनन्दस्वरूप होने से सुख के महासागर की तरह हैं। योगिजन अन्तर्मुख होकर उन्हें अपनी आत्मा की तरह जानकर उसमें स्थित रहते हैं। मानों वे आनन्द के समुद्र में गोते लगा रहे है। इसलिए परमात्मा महाह्रद कहलाते हैं।

उन आनन्दस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८०४ -

ॐ महागर्ताय नमः

महादुस्तर मायावाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Chasm.

गर्तवद् अस्य माया महती दुरत्यया इति महागर्तः, 'मम माया दुरत्यया' इति भगवद्वचनात् अर्थात् भगवान् की माया गड्ढ़े के समान अति दुस्तर है, इसलिए वे महागर्त हैं। भवगान् ने कहा है – 'मेरी माया दुस्तर है'। भगवान की माया अत्यन्त प्रबल है, जिसके वशीभूत होकर जीव जन्म–जन्मान्तर तक संसार में फंसा रहता है। फिर भी उससे मुक्त होने की प्रेरणा बहुत वीरलों को ही होती है। यह माया स्वतंत्र नहीं होते हुए भगवान पर ही आश्रित है। ऐसी बलशाली माया से युक्त होने से वे महागर्त कहलाते है। उन बलवती मायावाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८०५ –

ॐ महाभूताय नमः

काल से परे परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Great Being.

कालत्रय अनवच्छिन्नस्वरूपत्वात् महाभूतः अर्थात् तीनो काल से अनवच्छिन्न अर्थात् विभागरहित होने से परमात्मा महाभूत हैं। भवन्ति अर्थात् जो कुछ भी उत्पन्न होता है, वह भूत कहा जाता है। यह समस्त भूत जगत किसी न किसी काल में उत्पन्न हुआ है, वह काल परमात्मा से ही उत्पन्न होता है। परमात्मा स्वयं काल से परे, काल के अधिष्ठानभूत होने से वे महाभूत कहलाते हैं। उन काल से परे परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८०६ -

ॐ महानिधये नमः

सभी भूतों के निधानरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Abode.

सर्वभूतानि अस्मिन्न अधीयन्ते इति निधिः महांश्च असौ निधिश्च इति महानिधिः अर्थात् जिनमें समस्त भूत रहते हैं, अतः जो महान् और निधि भी हैं, वे भगवान् महानिधि हैं। सभी भूत परमात्मा से उत्पन्न होकर परमात्मा में ही स्थित रहते हैं और परमात्मा में ही विलीन हो जाते हैं। इस प्रकार वे समस्त भूतों के निधान रूप होने से महानिधि हैं।

उन महानिधि रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८०७ –

ॐ कुमुदाय नमः

पृथ्वी को मुदित करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Rejoicer of the Earth.

कुं धरणिं भारावतरणं कुर्वन् मोदयति इति कुमुदः अर्थात् कु अर्थात् पृथ्वी को उसका भार उतारते हुए मोहित करते हैं, इसलिए कुमुद हैं। जब जब पृथ्वी पर असुरों के द्वारा अधर्म का भार बढ़ता है, तब तब पृथ्वी मानों पाप के भार से संतप्त हो जाती है और सभी धर्मावलम्बी तथा संत्रस्त जीव आर्तभाव से परमात्मा की शरण में जाते हैं। तब परमात्मा स्वयं अवतार धारण करके अधर्म का नाश करके पृथ्वी पर से पाप का भार उतारकर उसे प्रसन्न करते हैं। इसलिए वे कुमुद कहलाते हैं। उन पृथ्वी को मुदित करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८०८ –

ॐ कुन्दराय नमः

कुन्द के समान फल देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Bestower of Fruits

कुन्द पुष्पतुल्यानि शुद्धानि फलानि राति ददाति, लात्याददत्ते इति वा कुन्दरः कुन्द–पुष्प के समान शुद्ध फल देते हैं अथवा उन्हें लेते – ग्रहण करते हैं, इसलिए कुन्दर हैं। जीव कर्म करता है, उसका फल देनेवाले परमात्मा ही हैं। वे जीवों को उनके कर्म के अनुरूप फल प्रदान करते हैं। न केवल फल देते हैं, किन्तु परमात्मा के प्रति भक्तिपूर्वक समर्पित किया हुआ वे प्रेम से ग्रहण भी करते हैं। जैसे श्रीराम ने शबरी के बेर को ग्रहण किया था। इसलिए वे कुन्दर कहलाते हैं। उन कुन्द–पुष्प के समान सुन्दर फल देने और ग्रहण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८०९ –

ॐ कुन्दाय नमः

कुन्दवत् निर्मल और सुन्दर परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is like Jasmine.

कुन्द उपमसुन्दरांगत्वात् स्वच्छतया स्फटिकनिर्मलः कुन्दः अर्थात कुन्द के समान सुन्दर अंगवाले होने से भगवान् स्वच्छ, स्फटिकमणि के समान निर्मल हैं, इसलिए वे कुन्द हैं। कुन्द पुष्प सुन्दरता का प्रतीक है। भगवान विशुद्ध सत्व प्रधान उपाधि से युक्त तथा समस्त गुणों के निधान होने की वजह से उनके अंग–प्रत्यंग से मानों सुन्दरता व निर्मलता प्रस्फुटित होती है। वे कुन्द के समान सुन्दर और निर्मल होने की वजह से वे कुन्द कहलाते हैं। उन कुन्द के समान निर्मल व सुन्दर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८१० -

ॐ पर्जन्याय नमः

त्रितापों का शमन करनेवाली वर्षा-रूप प्रभु को नमन।

I salute the one who is like the Rain-Bearing Clouds.

पर्जन्यवदाध्यात्मिकादि तापत्रयं शमयति इति पर्जन्यः अर्थात् पर्जन्य के समान आध्यात्मिकादि तीनों तापों को शान्त करते हैं, इसलिए पर्जन्य हैं। जिस प्रकार वर्षा सूर्य की प्रचण्ड गर्मी से संतप्त को शीतलता प्रदान करती है, वैसे ही संसार से संतप्त जीव जब परमात्मा की शरण में जाता है तो उनके भी त्रिविध तापों की शान्त होती है। इसलिए वे पर्जन्य कहलाते हैं।

उन वर्षा के समान त्रिविध तापों को शान्त करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८११ -

ॐ पावनाय नमः

पवित्र करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Purifier.

स्मृतिमात्रेण पुनाति इति पावनः अर्थात् स्मरणमात्र से पवित्र करते हैं, इसलिए वे पावन हैं। अहंकार ही पाप की जड़ होता है। अज्ञानी जीव जब अपने से महान, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, करुणानिधान भगवान का स्मरण करता है, तो उन्हें अपनी सीमाएं और झूठे अभिमान का भान होता जाता है। यह उसमें शरणागति का और अहं के विसर्जन का कारण बनता है। अहंकार से मुक्त होने पर वह पाप से भी मुक्त होता जाता है। इसलिए भगवान पवित्र करनेवाले पावन कहलाते हैं। उन पावन करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८१२ –

ॐ अनिलाय नमः

अज्ञान से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is devoid of ignorance.

इलति स्वपिति इति अज्ञः इलः, तद्विपरीतो नित्य प्रबुद्धस्वरूपत्वात् इति अनिलः अर्थात् इलन अर्थात् शयन करता है, अतः इल अज्ञानी को कहते हैं, भगवान् नित्य, प्रबुद्धरूप होने से उसके विपरीत हैं, इसलिए वे अनिल हैं। जीव अज्ञान की निद्रा में सो रहा है और उसके कारण संसार से संतप्त होता है। किन्तु भगवान् सदैव अपनी ज्ञानस्वरूपता में जगे हुए हैं। इसलिए वे अनिल कहलाते हैं। उन अज्ञान से रहित प्रबुद्धस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८१३ -

ॐ अमृताशाय नमः

अमृतपान करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who partakes ambrosia.

मथितं अमृतं सुरान् पाययित्वा स्वयं च अश्नाति इति अमृताशः अर्थात् समुद्र से मथकर निकाला हुआ अमृत देवताओं को पिलाकर स्वयं पिया, इसलिए भगवान् अमृताश हैं। जिस समय देवता और असुरों द्वारा समुद्रमंथन करने पर, उसमें से अमृत प्राप्त हुआ, और उसका पान करने के लिए देव और असुरों के मध्य में कलह को मिटाने के लिए भगवान् ने मोहिनी का रूप धारण करके देवताओं को अमृत पिलाया और अन्त में स्वयं भी पान किया, इसलिए वे अमृताश कहलाते हैं। उन अमृत पान करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८१४ -

ॐ अमृतवपुषे नमः

चित्स्वरूप, मृत्युरहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Immortal Form.

मृत मरणं, तद्रहितं वपुः अस्य इति अमृतवपुः अर्थात् मृत मरण को कहते हैं, भगवान् का शरीर मरण से रहित है, इसलिए वे अमृतवपु हैं। सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा स्वयं जन्म-मृत्यु से परे हैं। क्योंकि वे शाश्वत सत्यस्वरूप हैं। इसलिए वे अमृतवपु कहलाते हैं।

उन चित्स्वरूप, मृत्युरहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
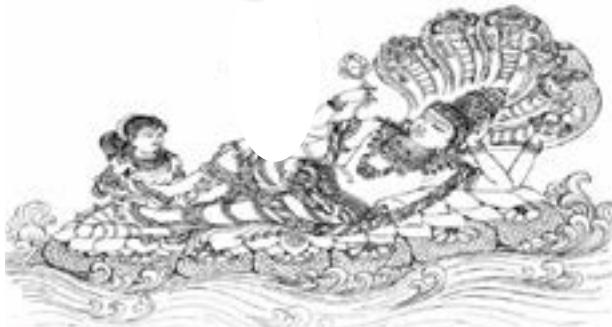
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८१५ –

ॐ सर्वज्ञाय नमः

सर्वज्ञ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Omniscient.

सर्वं जानाति इति सर्वज्ञः। 'यः सर्वज्ञः सर्ववित्' इति श्रुतेः अर्थात् सब कुछ जानते हैं, इसलिए सर्वज्ञ हैं। श्रुति कहती है, 'जो सर्वज्ञ और सर्ववित् है।' जिस प्रकार से घड़े को बनानेवाले कुम्हार को घड़ें का ज्ञान होता है, इसलिए वह घटज्ञ कहलाता है। उसी प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड के रचयिता स्वयं परमात्मा हैं। वे सब को बनानेवाले सर्वज्ञ हैं।

उन सर्वज्ञ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८१६ –

ॐ सर्वतोमुखाय नमः

सर्वत्र मुखवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one having Faces All Round.

'सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्' इति भगवद्वचनात् सर्वतो–मुखम् अर्थात् 'सब ओर नेत्र, सिर और मुखवाले हैं' भगवान् के इस वचनानुसार भगवान् सर्वतोमुख हैं। जगत में जितने भी जीव है, वे सब परमात्मा की ही अभिव्यक्तियां हैं। इसलिए उन सबके नेत्र, सिर, मुख आदि परमात्मा का ही है। इस प्रकार वे सर्वत्र मुख आदि वाले होने से सर्वतोमुख कहलाते हैं। उन सर्वत्र मुखवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
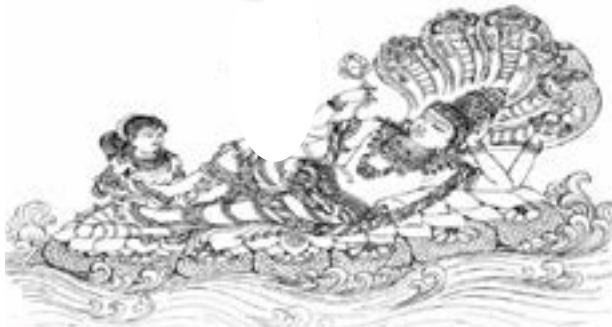
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८१७ -

ॐ सुलभाय नमः

सुलभ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Easily Attainable.

पत्रपुष्पफलादिभिः भक्तिमात्र समर्पितैः सुखेन लभ्यते इति सुलभः। अर्थात् केवल भक्ति से समर्पण किए पत्र, पुष्प आदि से भी सुखपूर्वक मिल जाते हैं, इसलिए भगवान् सुलभ हैं। परमात्मा सर्वव्यापी, सब की अन्तरात्मा की तरह विराजमान हैं। इसलिए वे भक्तिपूर्वक समर्पण से अनायास ही प्राप्त होते हैं। उसके लिए जीव को किसी विशेष कर्म अथवा अति प्रयास की अपेक्षा नहीं होती है। मात्र प्रेमपूर्वक समर्पण अर्थात् अपने अहंकार के विसर्जन की आवश्यकता है। इसलिए वे सुलभ कहलाते हैं। उन सुलभ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८१८ -

ॐ सुव्रताय नमः

भोक्तापन से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is free from enjoyership.

शोभनं भोजनात् निवर्तते इति सुव्रतः अर्थात् स्वादिष्ट भोजन के प्रति निर्भरता से मुक्त हैं, इसलिए सुव्रत हैं। जीव अज्ञानवशात् अपने आपको अपूर्ण मानता है, इसलिए सतत अपने से पृथक् बाह्य विषयों का भोग करके तृप्त होता है, इस भोगवृत्ति की वजह से जीव भोक्ता कहलाता है। किन्तु परमात्मा स्वयं अपने आपमें कृतार्थ, परिपूर्ण हैं। इसलिए उन्हें किसी प्रकार के भोग की आवश्यकता नहीं है। इसलिए अभोक्ता होने से सुव्रत कहलाते हैं। उन परिपूर्ण परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८१९ -

ॐ सिद्धाय नमः

सिद्धस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Fulfilled.

अनन्याधीनत्वात् सिद्धः अर्थात् भगवान् की सिद्धि दूसरे के अधीन नहीं है, इसलिए वे सिद्ध हैं। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश को देखने के लिए अन्य प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि वह प्रकाशस्वरूप हैं। उसी प्रकार भगवान चेतनस्वरूप होने से वे स्वत:सिद्ध है, उनके अस्तित्व की सिद्धि के लिए तथा उन्हें जानने के लिए किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि वे सिद्ध स्वरूप हैं। उन सिद्धस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८२० -

ॐ शत्रुजिते नमः

असुरों को जीतनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Triumphant.

सुरशात्रवः एव अस्य शात्रवः, तान् जयति इति शत्रुजित् अर्थात् देवताओं के शत्रु ही भगवान् के शत्रु हैं, उन्हें जीतते हैं, इसलिए वे शत्रुजित् हैं। सृष्टि के संचालन में देवता लोग भगवान् के अच्छे निमित्त बनकर सेवा करते हैं। देवताओं के शत्रु असुर होते हैं, जो अपने स्वार्थ और स्वकेन्द्रित कामनाओं की पूर्ति के लिए अधर्म का आश्रय लेते हैं, और देवताओं के कार्य में विघ्न उत्पन्न करते हैं। भगवान् उन देवताओं के शत्रु को पराजित करते हैं। इसलिए वे शत्रुजित् कहलाते हैं। उन शत्रुजित् परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

\- ८२१ -

ॐ शत्रुतापनाय नमः

शत्रुओं को तपानेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Scorcher of Enemies.

सुरशत्रूणां तापनः शत्रुतापनः अर्थात् देवताओं के शत्रु को तपानेवाले हैं, इसलिए वे शत्रुतापन हैं। भगवान् को धर्म अत्यन्त प्रिय है। जो भी धर्ममार्ग का अनुसरण करते हैं, तथा धर्म की व्यवस्था में योगदान देते हैं, वे भगवान् को प्रिय है। तद्विपरीत अधर्म भगवान् को अप्रिय होने की वजह से अधर्म का आश्रय लेनेवाले ही भगवान् के शत्रु है। वे अपनी अधर्ममय आसुरी प्रवृत्ति की वजह से भगवान् से भयभीत रहते है, इस प्रकार मानों भगवान् उन्हें तपाते हैं। इसलिए वे शत्रुतापन कहे जाते हैं। उन शत्रुओं को तपानेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८२२ –

ॐ न्यग्रोधाय नमः

न्यग्रोध रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Above All.

न्यक् अर्वाक् रोहति सर्वेषां उपरिवर्तत इति न्यग्रोधः अर्थात् नीचे की ओर से उगते हैं, और सबके उपर विराजमान हैं, इसलिए वे न्यग्रोध हैं। परमात्मा जगत के अधिष्ठानभूत तत्त्व अर्थात सबके आधार की तरह स्थित हैं। सम्पूर्ण जगत उनकी ही मानों अभिव्यक्तिरूप उनके उपर स्थित है। इसलिए वे नीचे की ओर रहते हुए भी उपर की ओर मानों बढ़ते कहे जाते हैं। इसलिए न्यग्रोध हैं।

उन न्यग्रोध रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८२३ -

ॐ उदुम्बराय नमः

आकाश से परे परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Transcending Space.

अम्बराद् उद्गतः कारणत्वेन इति उदुम्बरः अर्थात् कारणरूप से आकाश से भी उपर हैं, इसलिए उदुम्बर हैं। पंचमहाभूत से बने हुए जगत में सबसे प्रथम आकाश तत्त्व की उत्पत्ति होती है, उसके उपरान्त उनमें से अन्य सभी महाभूत उत्पन्न होते हैं। अतः आकाश अन्य चार महाभूतों का कारणरूप है। उस आकाश की उत्पत्ति भी परमात्मा से होती है। किन्तु परमात्मा की उत्पत्ति नहीं होती है, इसलिए वे आकाश से भी उपर अर्थात् परे हैं। उन आकाश से परे परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८२४ -

ॐ अश्वत्थाय नमः

अश्वत्थवृक्ष की तरह स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Tree of Life.

श्वो अपि न स्थातेति अश्वत्थः अर्थात् श्व अर्थात् कल भी रहनेवाला नहीं है, इसलिए अश्वत्थ हैं। जिस प्रकार अश्वत्थ अर्थात् पीपल का वृक्ष अनेकों वर्ष तक जीवित रहता है, किन्तु उसकी जड़ें समाप्त होने पर उसका अस्तित्व खतम हो जाता है। वैसे ही इस नामरूपात्मक जगत की तरह अभिव्यक्त परमात्मा का जगत की तरह अस्तित्व तब तक ही रहता है, जब तक उसके कारणरूप अज्ञान को समाप्त न किया जाए। इसलिए वे अश्वत्थ कहलाते हैं। उन अश्वत्थवृक्ष की तरह स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
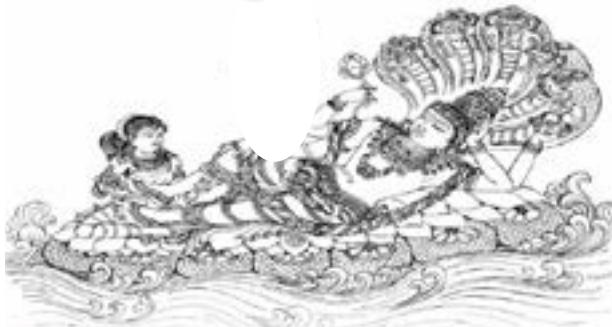
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८२५ –

ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः

चाणूर का वध करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Slayer of Chaanoora.

चाणूर नामान् अन्ध्रं निषूदितवान् इति चाणूर–अन्ध्रनिषूदनः अर्थात् चाणूर नाम के अन्ध्र जाति के वीर को मारा था, इसलिए चाणूरान्ध्रनिषूदन हैं। भगवान् जब द्वापर युग में श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हुए, तब कंस ने भगवान् को मारने हेतु चाणूर नामक पहलवान, जो कि अन्ध्र जाति का था, उसे भगवान् के साथ मल्लयुद्धके लिए नियुक्त किया था। भगवान् ने मल्लयुद्ध में उसका वध किया था। इसलिए वे चाणूरान्ध्रनिषूदन कहलाते हैं। उन चाणूर का वध करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
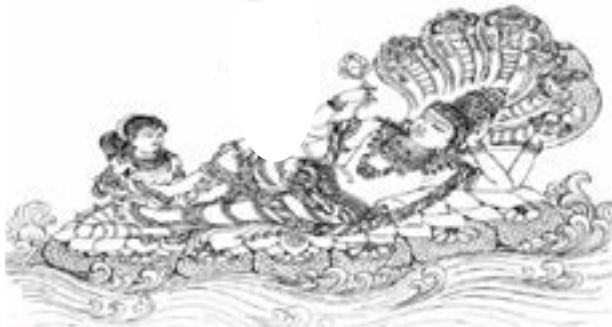
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८२६ –

ॐ सहस्रार्चिषे नमः

सैकड़ों किरणोंवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute The Thousand-rayed.

सहस्राणि अनन्तानि अर्चींषि यस्य स सहस्रार्चिः ; 'दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता। यदि भाः सदृशी सा स्यात् भासस्तस्य महात्मनः।। अर्थात् जिनके सहस्र अर्थात् अनन्त अर्चियां हैं, वे भगवान् सहस्रार्चि हैं। गीता में कहा है – यदि आकाश में हजार सूर्यो का एक साथ प्रकाश हो तो वह उस महात्मा के प्रकाश के समान हो सकता है।'

उन सहस्र किरणों वाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८२७ –

ॐ सप्तजिह्वाय नमः

सात जिह्वावाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Seven-tongued.

सप्त जिह्वा अस्य सन्ति इति सप्तजिह्वः; 'काली कराली च मनोजवा च, सुलोहिता या च सुधूम्र-वर्णा। स्फुलिंगिनी विश्वरुची च देवी, लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः।। अर्थात् उनकी सात जिह्वाएं हैं, इसलिए वे सप्तजिह्व हैं। श्रुति कहती हैं, 'अग्नि की काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी और देवी विश्वरुची – ये सात लपलपाती हुई जिह्वाएं हैं। अग्नि परमात्मा की ही विभूतिरूप हैं। इसलिए सात जिह्वावाली अग्नि परमात्मा की ही अभिव्यक्ति है। उन सप्तजिह्वा अग्निरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८२८ –

ॐ सप्तैधसे नमः

सात दीप्तिवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Seven Flamed.

सप्त एधांसि दीप्तयो अस्य इति सप्तैधाः अग्निः, 'सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः' इति मन्त्र–वर्णात्। अर्थात् अग्निरूप भगवान् की सात एधाएं अर्थात् दीप्तियां हैं, इसलिए वे सप्तैधा हैं। मन्त्रवर्ण कहता है – 'हे अग्नि! तेरी सात समिध् और सात जिह्वाएं हैं।' अग्नि की सात जिह्वा ही सात दीप्ति अथवा एधाएं है।

उन सात दीप्तिवाली अग्निरूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८२९ –

ॐ सप्तवाहनाय नमः

सूर्यदेवता के रूप में स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Lord Sun.

सप्त अश्वा वाहनानि अस्य इति सप्तवाहनः अर्थात् सात घोड़े सूर्यरूप भगवान् के वाहन हैं, इसलिए वे सप्तवाहन हैं। सूर्यदेवता परमात्मा की सर्वप्रथम सुन्दर व ग्राह्य अभिव्यक्ति हैं। सूर्यदेवता सतत भ्रमण करते हैं, जिससे दिन और रात का चक्र चलता रहता है। सूर्यदेवता अपने सात घोड़ेवाले रथ पर मानों भ्रमण करते हैं, इस प्रकार काव्यात्मक रूप से ऋषियों ने उनका वर्णन किया हैं। उन सात घोड़े से युक्त रथवाले सूर्यदेवता के रूप में स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८३० –

ॐ अमूर्तये नमः

अमूर्तिरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Formless.

देहसंस्थानलक्षणा मूर्च्छित अंगावयवा मूर्तिः, तद्रहित इति अमूर्तिः अर्थात् देह–संस्थानरूप संगठित अवयव ही मूर्ति है, उससे रहित होने के कारण अमूर्ति हैं। परमात्मा इस पंचमहाभूत के बने हुए अनेकों इन्द्रियादि अवयवों से युक्त इस शरीर में जीवरूप से स्थित हैं। किन्तु स्वयं उन सब अवयवों से, नामरूपात्मक देह से रहित हैं। उनका न तो कोई रूप है, न कोई आकार है, इसलिए वे किसी भी रूप व आकार को ग्रहण करने में सक्षम हैं। अतः वे अमूर्ति हैं। उन मूर्तिरहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८३१ -

ॐ अनघाय नमः

निष्पाप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Sinless.

अघं दुःखं पापं चास्य न विद्यते इति अनघः अर्थात् जिसमें अघ अर्थात् दुःख या पाप नहीं है, वे भगवान् अनघ हैं। अपूर्ण जीव अपने सुख और सुरक्षा की चिन्ता से प्रेरित होकर स्वार्थप्रेरित कर्म कर्म का आश्रय लेता है, और स्वार्थप्रेरित कर्म ही पाप की जड़ होते है। किन्तु परमात्मा पूर्णस्वरूप होने से उनमें स्वार्थ की चिन्ता और तत्प्रेरित कर्म की सम्भावना ही नहीं है। इसलिए वे निष्पाप अर्थात् अनघ हैं। उन निष्पाप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८३२ -

ॐ अचिन्त्याय नमः

अचिन्त्य रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Incomprehensible.

प्रमात्राादिसाक्षित्वेन सर्वप्रमाणागोचरत्वात् अचिन्त्यः अर्थात् प्रमाता आदि के भी साक्षी होने से, सब प्रमाणों के अविषय होनेके कारण अचिन्त्य हैं। प्रमाता अपने मन, बुद्धि तथा इन्द्रियां रूप प्रमाण का आश्रय लेकर विविध वस्तुओं को विषयीकृत करते हुए जानता है। तथा जिसे वह जानता है, वह ही चिन्त्य होता है। परमात्मा उन जाननेवाले प्रमाता के भी साक्षी रूप होने से प्रमाता के द्वारा अचिन्त्य है। उन अचिन्त्यस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८३३ -

ॐ भयकृते नमः

भयकर्ता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Giver of Fear.

असन्मार्गवर्तिनां भयं करोति भयकृत् अर्थात् असन्मार्ग में चलनेवालों को भय उत्पन्न करते हैं, इसलिए भयकृत् हैं। भगवान् सर्वकर्मफलदाता हैं। इसलिए जो भी पाप कर्म का आश्रय लेता है, वह कर्मफल के भय की वजह से कर्मफलदाता भगवान् से भयभीत होता है। इस प्रकार मानों भगवान् भय उत्पन्न करनेवाले हैं। इसलिए वे भयकृत् कहलाते हैं।

उन भयकर्ता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८३४ -

ॐ भयनाशनाय नमः

भयनाशक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Destroyer of Fear.

वर्णाश्रमाचारवतां भयं नाशयति इति भयनाशनः अथात् वर्णाश्रम-धर्म का पालन करनेवालों का भय नष्ट करते हैं, इसलिए भगवान् भयनाशन हैं। प्रत्येक जीव की प्रकृति के अनुरूप उसका वर्ण तथा अवस्था के अनुरूप आश्रम के धर्म होते हैं। इसलिए यदि वर्णाश्रम के धर्मों का कोई पालन करता है, तो वह सृष्टि की व्यवस्था में अपना योगदान देने के द्वारा भगवदाज्ञा का ही पालन करता है। अतः उसे किसी से भी भय नहीं रह जाता है। मानों भगवान् की और से उसे अभयदान प्राप्त हो गया हो। इसलिए भगवान् भयनाशन कहलाते हैं।

उन भय के नाशक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
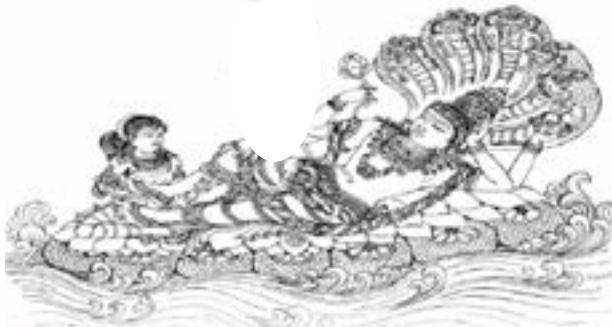
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८३५ –

ॐ अणवे नमः

अत्यन्त सूक्ष्म परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Subtlest.

सौक्ष्म्यातिशयशालित्वाद् अणुः, ‘एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यः’ इति श्रुतेः। अर्थात् अत्यन्त सूक्ष्म होने से भगवान् अणु हैं। श्रुति कहती हैं ‘यह अणु अर्थात् सूक्ष्म आत्मा चित्त से जानने योग्य हैं।’ जो जितना सूक्ष्म होता है, उतना ही व्यापक होता है। आकाश पंचमहाभूतों में से सब से सूक्ष्म है, इसलिए वह सब जगह व्याप्त है। किन्तु आकाश को भी व्याप्त करनेवाले परमात्मा, आकाश को भी अस्तित्व प्रदान करनेवाले हैं। वे सर्वव्यापी होने से सब से सूक्ष्म हैं। इसलिए वे अणु कहलाते हैं। उन अत्यन्त सूक्ष्म परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८३६ -

ॐ बृहते नमः

सब से महान् परमात्मा को नमस्कार।

I salute the The Greatest.

बृहत्वाद् बृंहणत्वाच्च ब्रह्म बृहत्, 'महतो महीयान्' इति श्रुतेः। अर्थात् बृहत् अर्थात् बड़ा तथा बृंहण अर्थात् जगत रूपसे बढ़नेवाला होने के कारण ब्रह्म बृहत् हैं। श्रुति बताती है – 'महान् से भी अत्यन्त महान् हैं।' परमात्मा सब से सूक्ष्म हैं। इसलिए वे सर्वव्यापी हैं। अतः वे सबसे महान् अर्थात् बड़े को भी व्याप्त करनेवाले, उसकी आत्मा की तरह होने से वे उससे भी महान् हैं। इसलिए वे बृहत् कहलाते हैं।

उन सबसे महान् परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८३७ -

ॐ कृशाय नमः

सब से क्षीण परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Lean.

अस्थूलम् इत्यादिना द्रव्यप्रतिषेधात् कृशः अर्थात् 'अस्थूल हैं' इत्यादि श्रुति से द्रव्यत्व का प्रतिषेध किए जाने के कारण वह कृश है। परमात्मा को सबसे महान् व बड़ा कहने पर इन्द्रिय तथा मन के द्वारा ग्रहण करके विषयीकृत करने की चेष्टा हो सकती है। परमात्मा सब की आत्मा की तरह होने से सब का अविषय हैं। इसलिए उन्हें विषय की तरह ग्रहण करने की चेष्टा पर विराम लगाने के लिए बृहत् का विरोधी कृश बताया गया। उन सबके अविषय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८३८ -

ॐ स्थूलाय नमः

स्थूलस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Grossest.

स्थूलः इति उपचर्यते सर्वात्मत्वात् अर्थात् सर्वात्मक होने के कारण ब्रह्म को उपचार से स्थूल कहते हैं। परमात्मा सब को अस्तित्व प्रदान करते हुए सब की आत्मा की तरह से स्थित हैं। जो सबसे स्थूल है, उसकी भी आत्मा होने से उनसे भी स्थूल हैं। इसलिए वे स्थूल कहे जाते हैं।

उन स्थूलस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८३९ -

ॐ गुणभृते नमः

माया के अधिष्ठानभूत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Sustains Maya.

सत्त्वरजस्तमसां सृष्टिस्थितिलयकर्मस्वधिष्ठातृत्वात् गुणभृत् अर्थात् सृष्टि, स्थिति और लयरूप कर्म में सत्व, रज और तम – इन तीनों गुणों के अधिष्ठाता होने के कारण भगवान् गुणभृत् हैं। माया के सत्व, रजस् और तमस् यह तीन गुण होते हैं। उस त्रिगुणात्मिका माया को धारण करके वे जगत की उत्पत्ति, स्थित और लय करते हैं। त्रिगुणात्मिका माया के अधिष्ठानभूत, उसे धारण करनेवाले होने से वे गुणभृत् कहलाते हैं। उन त्रिगुणात्मिका माया के अधिष्ठानभूत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८४० -

ॐ निर्गुणाय नमः

निर्गुणस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is without any Properties..

वस्तुतो गुणाभावात् निर्गुणः, 'केवलो निर्गुणश्च' इति श्रुतेः। अर्थात् परमार्थतः उनमें गुणों का अभाव है, इसलिए वे निर्गुण हैं। श्रुति कहती है - 'केवल और निर्गुण है।' परमात्मा तीन गुणोंवाली गुणात्मिका माया के अधिष्ठानभूत, किन्तु स्वयं वे तीनों गुणों से रहित हैं। उन पर गुणों का कोई कार्य वा प्रभाव नहीं होता है। इसलिए वे निर्गुण कहलाते हैं।

उन गुणों से रहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८४१ -

ॐ महते नमः

महान् परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Glorious.

शब्दादिरहितत्वात् निरतिशयसूक्ष्मत्वात् नित्यशुद्ध सर्वगतत्वादिना च प्रतिबन्धकं धर्मजातं तर्कतोऽपि यतो वक्तुं न शक्यम् अत एव महान् अर्थात् शब्दादि गुणों से रहित, अत्यन्त सूक्ष्म तथा नित्य शुद्ध और सर्वगत होने के कारण भगवान् में विघ्नरूप कर्म–समूह का अत्यन्त अभाव है, इसलिए वे महान् हैं। शब्दादि विषयों में ही महान व न्यूनता का तारतम्य होता है। परमात्मा शब्दादि से परे, सर्वव्यापी तथा सब की आत्मा हैं। इसलिए जो कुछ भी महान् है, वह भी परमात्मा ही हैं। उन महान् परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८४२ -

ॐ अधृताय नमः

अधृत स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supported by None.

पृथिव्यादीनां धारकाणामपि धारकत्वात् केनचिद् न ध्रियते इति अधृतः अर्थात् पृथिवी आदि धारण करनेवालों को भी धारण करनेवाले होने से किसीसे भी धारण नहीं किये जाते, इसलिए अधृत हैं। पुराण के अनुसार पृथ्वी को शेषनाग अपने मस्तक पर धारण करते हैं। उन शेषनाग का होना परमात्मा की वजह से हैं अर्थात् परमात्मा उसे भी धारण करनेवाले, सब के अधिष्ठानभूत तत्त्व हैं, वे किसी के द्वारा धारण नहीं होने के कारण अधृत हैं। उन अधृतस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
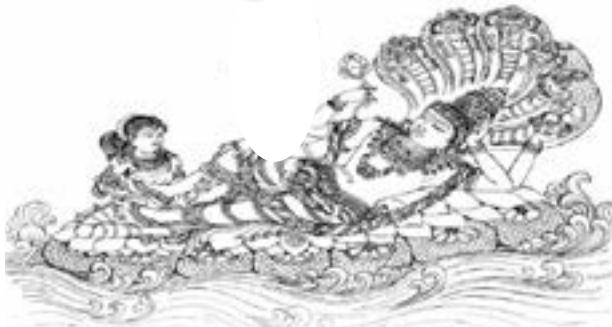
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८४३ –

ॐ स्वधृताय नमः

स्वतः सिद्ध परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Self-supported.

स्वेनैव आत्मना धार्यते इति स्वधृतः, 'स भगवः कस्मिन् प्रतिष्ठित इति स्वे महिम्नि।' इति श्रुतेः। अर्थात् वे स्वयं अपने आपसे ही धारण किये जाते हैं, अतः वे स्वधृत हैं। श्रुति कहती है – 'भगवन्! वह किसमें स्थित है? अपनी महिमा में।' परमात्मा सबको धारण करनेवाले स्वतःसिद्ध हैं। उनका होना किसी पर आश्रित नहीं है, इसलिए मानों वे स्वयं ही धारण होते हैं। वे किसी के द्वारा धारण नहीं किए जाते हैं, इसलिए वे स्वधृत कहलाते हैं। उन स्वतः सिद्ध परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८४४ –

ॐ स्वास्याय नमः

सुन्दर मुखवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Effulgent Face.

वेदात्मको महान् शब्दराशिः तस्य मुखान्निर्गतः पुरुषार्थोपदेशार्थमिति स्वास्यः अर्थात् पुरुषार्थ को उपदेश करने के लिए उनके मुख से वेदार्थरूपी महान् शब्द–समूह निकला है, इसलिए वे स्वास्य हैं। सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही परमात्मा के मुख से वेद रूप महान् शब्दराशि प्रकट हुई है, जिसमें समस्त पुरुषार्थो की सिद्धि का रहस्य उद्घाटित है। जिस मुख से ऐसी महान् शब्दराशि प्रकट़ हुई है, वह निश्चित रूप से बहुत सुन्दर हैं। इसलिए परमात्मा स्वास्य अर्थात् सुन्दर मुखवाले कहे जाते हैं। उन सुन्दर मुखवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८४५ -

ॐ प्राग्वंशाय नमः

सर्व प्रथम-वंशी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Most Ancient.

अन्यस्य वंशिनो वंशाः पाश्चात्त्यः; अस्य वंशः प्रपंचः प्रागेव, न पाश्चात्त्यः इति प्राग्वंशः अर्थात् अन्य वंशियों के वंश पीछे हुए हैं, परन्तु भगवान् का प्रपंचरूप वंश पहले से ही है, पीछे नहीं हुआ है, इसलिए प्राग्वंश हैं। सभी जीव उत्पन्न होने के उपरान्त अपनी संतति को आगे बढ़ाने में निमित्त बनते हैं, इसलिए वे वंश को चलानेवाले वंशी कहे जाते है। किन्तु परमात्मा का यह सृष्टिरूप वंश अन्य सभी वंशियों के पहले ही उत्पन्न हुआ है, इसलिए वे प्राग्वंश है। उन सबसे पहले वंशी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८४६ -

ॐ वंशवर्धनाय नमः

वंश का वर्धन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the The Progenitor.

वंशं प्रपंचं वर्धयन् छेदयन् वा वंशवर्धनः अर्थात् अपने वंशरूप प्रपंच को बढ़ाने अथवा नष्ट करने के कारण भगवान् वंशवर्धन हैं। परमात्मा अपनी मायाशक्ति को धारण करके इस सृष्टि को बढ़ाते भी हैं, तथा वे विनाश करके वंश का छेदन भी करते हैं, इसलिए वे वंशवर्धन कहलाते हैं।

उन वंश का वर्धन तथा छेदन करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८४७ -

ॐ भारभृते नमः

सबको धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bearer of the Universe.

अनन्तादिरूपेण भुवो भारं बिभ्रत् भारभृत् अर्थात् अनन्तादिरूप से पृथ्वीका भार उठाने के कारण वे भारभृत् हैं। पुराणानुसार समस्त पृथ्वी अनन्त अर्थात् शेषनाग ने धारण की है। यह शेषनाग परमात्मा की विभूति हैं। भगवान् गीता में बताते हैं कि, 'अनन्तश्चास्मि नागानां' अर्थात् 'सभी नाग में अनन्त नामक नाग जो पृथ्वी को धारण करनेवाला है, वह मैं ही हूं।' इस प्रकार पृथ्वी को धारण करनेवाला अनन्त नामक नाग परमात्मा की ही विभूति होने के कारण वे भारभृत् कहलाते हैं। उन सबको धारण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८४८ –

ॐ कथिताय नमः

वेदों के द्वारा प्रतिपादित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Glorified in the Vedas.

वेदादिभिः अयमेव परत्वेन कथितः, 'सर्वैर्वेदैः कथित इति वा' अर्थात् वेदादिकों ने पररूप से भगवान् का ही कथन किया है, अथवा सम्पूर्ण वेदों से भी भगवान् ही कथित हैं, इसलिए वे कथित हैं। परमात्मा किसी भी प्रकार के दृश्यादि विषयरूप नहीं हैं। इसलिए उन्हें चक्षु आदि इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण नहीं किए जा सकते है। परमात्मा के ज्ञान हेतु एक मात्र वेदशास्त्र ही प्रमाण है। वेदों के द्वारा परमात्मा का अन्य सब से विलक्षण ढंग से ज्ञान कराया जाने के कारण वे कथित कहे जाते हैं। उन वेद प्रतिपादित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८४९ -

ॐ योगिने नमः

ज्ञानरूप योग से गम्य परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is revealed by Gyana-Yoga

योगो ज्ञानम्, तेनैव गम्यत्वात् योगी अर्थात् योग ज्ञान को कहते हैं, उसीसे प्राप्तव्य होने के कारण भगवान् योगी हैं। परमात्मा हमारी आत्मा होने के कारण पहले से ही प्राप्त हैं, अज्ञानवशात् ही मानों अप्राप्त हैं। इसलिए वे ज्ञान से ही अज्ञान को दूर करने पर मानों प्राप्त हो जाते हैं। उन्हें प्राप्त करने के लिए किसी कर्मादि रूप साधना की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार ज्ञान रूपी योग से प्राप्त होने के कारण वे योगी कहलाते हैं। उन योगी रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८५० -

ॐ योगीशाय नमः

योगियों में श्रेष्ठ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of Yogis.

अन्ये योगिनो योगान्तरायैः हन्यते स्वरूपात् प्रमाद्यन्ति; अयं तु तद्रहितत्वात् तेषामीशः योगीशः अर्थात् अन्य योगीजन योग के विघ्नों से सताये जाते हैं, इसलिए वे स्वरूप से विचलित हो जाते हैं, परन्तु भगवान् उनसे रहित होते हैं, इसलिए योगीश है। योगी लोग मन को वश में करने की साधना में तत्पर व प्रयासरत रहते हैं, और उसमें अनेकों व्यवधान का सामना करते हैं। भगवान् पूर्ण-आनन्द स्वरूप होने से उनका मन सहज ही अपने वश में है, वे मन के स्वामी है। अतः योगियों में श्रेष्ठ कहे जाते हैं। उन योगीश परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८५१ -

ॐ सर्वकामदाय नमः

कामनापूर्ति करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Granter of Desires.

सर्वान् कामान् सदा ददाति इति सर्वकामदः, 'फलमतः उपपत्तेः' इति व्यासेन अभिहितत्वात्। अर्थात् सर्वदा सब कामनाएं देते हैं, इसलिए वे सर्वकामद हैं। भगवान् व्यासजी ने कहा है – 'फल इस परमात्मा से ही प्राप्त होते हैं, क्योंकि यही मानना युक्तिसंगत है।' जब जीव अपनी इष्टकामना की पूर्ति के लिए कर्म करता है, तो उन कर्म का फल देने के द्वारा उसकी इच्छापूर्ति स्वयं परमात्मा ही करते हैं। इसलिए वे सर्वकामद कहलाते हैं। उन सभी कामनाओं की पूर्ति करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८५२ -

ॐ आश्रमाय नमः

विश्रान्ति रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Sequestered Heaven.

आश्रमवत् सर्वेषां संसारारण्ये भ्रमतां विश्रामस्थानत्वात् आश्रमः। अर्थात् संसारवन में भटकते हुए समस्त पुरुषों के लिए आश्रम के समान विश्रान्ति के स्थान होने से परमात्मा आश्रम हैं। हर जीव अज्ञान और मोहवशात् संसाररूप अरण्य में भटकता रहता है। जीव के सीमित प्रयासों से इससे मुक्ति सम्भव नहीं होती है। जब वह परमात्मा के प्रति समर्पित होता है, तब वे उसे गुरु के रूप में आकर उपदेश देते हैं, इससे वह मुक्त हो जाता है, और परं विश्रान्ति को प्राप्त करता है। इसलिए परमात्मा आश्रम स्वरूप हैं। उनको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८५३ -

ॐ श्रमणाय नमः

सन्तप्त करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one as though who Scorches.

अविवेकिनः सर्वान् सन्तापयति इति श्रमणः। अर्थात् समस्त अविवेकियों को सन्तप्त करते हैं, इसलिए श्रमण हैं। अविवेकी अपनी नासमझी के कारण जगदीश्वर की महिमा नहीं जानकर उनके द्वारा प्रस्तुत जगत के नामरूपों में मोहित रहकर उनसे दूर जाता है। इससे वह संताप को प्राप्त करता है। इस प्रकार भगवान् मानों कि उन्हें सन्तप्त करते हैं, इसलिए वे श्रमण कहलाते हैं।

उन श्रमणरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८५४ -

ॐ क्षामाय नमः

सबको नष्ट करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Annihilator.

क्षामाः क्षीणाः सर्वाः प्रजाः करोति इति क्षामः। अर्थात् सम्पूर्ण प्रजाको क्षाम अर्थात् क्षीण करते हैं, इसलिए वे क्षाम हैं। प्रलय के समय परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्ति का संवरण कर लेते हैं। अतः समस्त जगत प्रजा समेत नष्ट हो जाता है। इस प्रकार परमात्मा ही सबको नष्ट करनेवाले होने से क्षाम कहलाते हैं।

सब को नष्ट करनेवाले उन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८५५ -

ॐ सुपर्णाय नमः

सुन्दर पर्णवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of the Golden Leaf.

शोभनानि पर्णानि छन्दांसि संसारतरुरूपिणो अस्य इति सुपर्णः, 'छन्दांसि यस्य पर्णानि' इति भगवद्वचनात्। अर्थात् संसारवृक्ष रूप परमात्मा के छन्दरूप सुन्दर पत्ते हैं, इसलिए वे सुपर्ण हैं; जैसा कि भगवान् का वाक्य है – 'छन्द जिसके पत्ते हैं।' यह सुन्दर संसारवृक्ष परमात्मा की ही अभिव्यक्ति हैं। इस वृक्ष के पत्ते वैदिक मंत्र है। इससे सम्पूर्ण पर और अपर विषयक ज्ञान होता है, इसलिए वे अत्यन्त सुन्दर हैं। सुन्दर पर्णवाले वृक्ष की तरह परमात्मा ही होने से वे सुपर्ण कहलाते हैं। सुन्दर पर्णवाले उन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
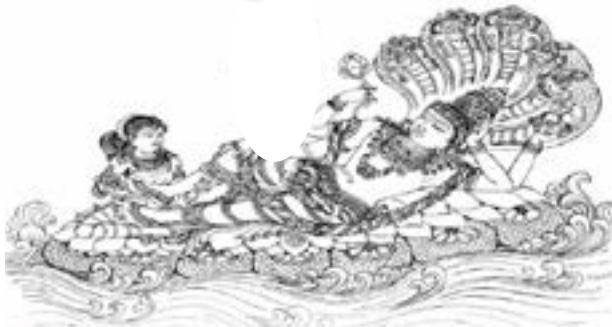
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८५६ –

ॐ वायुवाहनाय नमः

वायु का वहन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Commander of the Winds.

वायुर्वहति यद् भीत्या इति स वायुवाहनः, भीषास्माद्वातः पवते' इति श्रुतेः। अर्थात् जिनके भय से वायु वहन करती है, वे भगवान् वायुवाहन हैं। श्रुति कहती है – 'इसके भय से वायु चलता है।' प्रकृति के सब तत्त्व सृष्टि के संचालन में अपना अपना योगदान दे रहे हैं। जिसमें वायु भी सतत बहती है। उन वायु का भी वहन करनेवाले परमात्मा ही हैं। इसलिए वे वायुवाहन कहलाते हैं।

उन वायु का वहन करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८५७ –

ॐ धनुर्धराय नमः

महान् धनुष–धारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Wielder of the Bow.

श्रीमान् रामो महद् धनुर्धारयामास इति धनुर्धरः। अर्थात् श्रीमान् राम ने महान् धनुष धारण किया था, इसलिए वे धनुर्धर हैं। त्रेतायुग में जब राक्षसों का आतंक बढ़ गया और धर्म अधर्म के द्वारा अभिभूत होने लगा, तब भगवान् अपनी धर्मस्थापना की प्रतिज्ञापूर्ति हेतु श्रीराम के रूप में अवतरित हुए थे। तथा राक्षसों का विनाश करने के लिए धनुष धारण किया था, इसलिए वे धनुर्धर कहलाते हैं।

उन महान् धनुष–धारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८५८ -

ॐ धनुर्वेदाय नमः

धनुर्विद्या के ज्ञाता श्रीराम को नमस्कार।

I salute the one who is Master of Archery.

स एव दाशरथिः धनुर्वेदं वेत्ति इति धनुर्वेदः। अर्थात् वे ही दशरथकुमार धनुर्वेद जानते हैं, इसलिए वे धनुर्वेद हैं। भगवान् ने दशरथनन्दन श्रीराम के रूप में पृथ्वी का भार उतारने के लिए अवतार लिया था। तब उन्होंने धनुर्विद्या का अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त करके उसमें पारंगता हासिल की थी। अर्थात् वे धनुर्विद्या के सर्वश्रेष्ठ जानकार थे, इसलिए वे धनुर्वेद कहलाते हैं।

उन धनुर्विद्या के ज्ञाता श्रीराम को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८५९ -

ॐ दण्डाय नमः

अनुशासन रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Sceptre

दमनं दमयतां दण्डः, 'दण्डो दमयितामस्मि' इति भगवद् -वचनात्। दमन करनेवालों में दण्ड है, इसलिए वे दण्ड हैं। भगवान् कहते हैं - दमन करनेवालों का मैं दण्ड हूं।' इन्द्रियों को अनुशासित करने का नाम दण्ड है। इन्द्रियां स्वभाव से बहिर्मुख होती है। जगद्विषयक मोह की वजह से वे स्वच्छन्द हो जाती है। अतः उसे नियंत्रित करना कठिन सा प्रतीत होता है। किसी महान् लक्ष्य की सिद्धि हेतु उन इन्द्रियों पर अनुशासन परमात्मा की विभूतिरूप है। इसलिए वे दण्ड कहलाते हैं। उन दण्ड स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
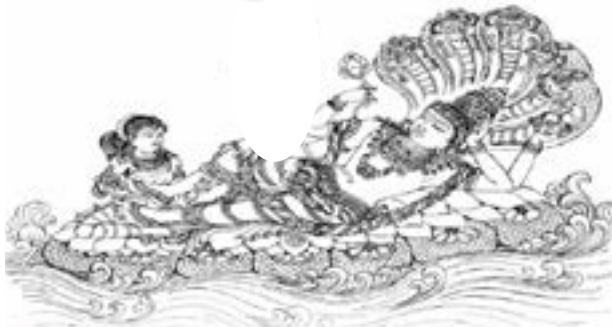
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८६० -

ॐ दमयित्रे नमः

दण्डित करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Controller.

वैवस्वतनरेन्द्रादिरूपेण प्रजा दमयति इति दमयिता। अर्थात् यम और राजा आदि के रूप में प्रजा का दमन करते हैं, इसलिए वे दमयिता हैं। जो भी अधर्म के मार्ग पर चलते हुए सृष्टि की व्यवस्था में व्यवधान उत्पन्न करते है, वे सब दण्ड के अधिकारी है। परमात्मा यम के रूप में उसे कुकर्म का फल देने के द्वारा दण्डित करते हैं, इसलिए वे दमयिता कहलाते हैं।

उन दण्डित करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८६१ –

ॐ दमाय नमः

दण्डके फलस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Subduer.

दमः दम्येषु दण्डकार्यं फलम् तच्च स एवेति दमः। अर्थात् दण्ड के अधिकारियों में जो दण्ड का फलस्वरूप कार्य है, वह दम कहलाता है; वह भी वे ही हैं, इसलिए दम हैं। भगवान् सृष्टि के नियन्ता भी होने से धर्म की व्यवस्था हेतु अधर्मियों को दण्डित भी करते हैं। उनके दण्डित करने के फलस्वरूप जो धर्म का साम्राज्य स्थापित होता है, वह धर्मस्वरूप स्वयं परमात्मा ही हैं। अतः वे दण्ड कहलाते हैं।

उन दण्ड के फलस्वरूप धर्मरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८६२ -

ॐ अपराजिताय नमः

अपराजित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Invincible.

शत्रुभिर्न पराजितः इति अपराजितः। अर्थात् शत्रुओंसे पराजित नहीं होते, इसलिए वे अपराजित हैं। भगवान् को धर्मप्रिय है, इसलिए जो भी धर्म की व्यवस्था में व्यवधान बनते हैं, वे अधर्ममार्गी ही उनके शत्रु हैं। उन अधर्मि रूप शत्रुओं का वे विनाश करते हैं। वे कभी भी उनसे परास्त नहीं होते हैं, इसलिए वे अपराजित कहलाते हैं।

उन अपराजित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८६३ –

ॐ सर्वसहाय नमः

सर्वसमर्थ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All-enduring.

सर्वकर्मसु समर्थ इति सर्वसहः। अर्थात् समस्त कर्मोंमें समर्थ हैं, इसलिए सर्वसह हैं। भगवान् स्वयं ही इस सृष्टि की तरह अभिव्यक्त हुए हैं। अतः जगत में किसीमें जो भी सामर्थ्य दिखता है, वह परमात्मा का ही अंशमात्र है। वे स्वयं उन सामर्थ्यो का पूंज हैं। उनके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। इसलिए वे सर्वसमर्थ अर्थात् सर्वसह कहलाते हैं।

उन सर्वसमर्थ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८६४ –

ॐ नियन्त्रे नमः

नियन्तारूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supreme Commander.

सर्वान् स्वेषु-स्वेषु कृत्येषु व्यवस्थापयति इति नियन्ता। अर्थात् सबको अपने-अपने कार्य में नियुक्त करते हैं, इसलिए वे नियन्ता हैं। परमात्मा सृष्टि की रचना के साथ ही उसका संचालन और व्यवस्था भी करते हैं। इस सृष्टि के संचालन हेतु प्रकृति के सभी तत्त्वों को, देवता आदि को नियमों में बांधकर उन-उनके कार्य में नियुक्त किया हुआ है, इससे सृष्टि का संचालन सुव्यवस्थित रूप से चलता है। इसलिए वे नियन्ता कहलाते हैं। उन सृष्टिनियन्ता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
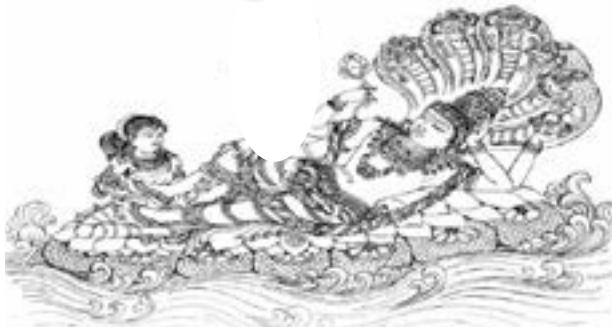
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८६५ -

ॐ अनियमाय नमः

नियमों से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Transcends all Law.

न नियमो नियतिस्तस्य विद्यते इति अनियमः, सर्वनियन्तुः नियन्तृ-अन्तराभावात्। अर्थात् भगवान्के लिए कोई नियम अर्थात् नियन्त्रण नहीं है इसलिए वे अनियम हैं; क्योंकि जो सबके नियन्ता हैं, उनका कोई और नियामक नहीं हो सकता। भगवान् सृष्टि के नियन्ता हैं, वे सबका नियमन करते हुए सृष्टि का संचालन करते हैं। वे सब के नियन्ता होने से उनका कोई नियन्ता नहीं है, अतः उनके लिए कोई नियम भी नहीं है। इसलिए वे अनियम कहलाते हैं।

उन नियमों से परे परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८६६ -

ॐ अयमाय नमः

मृत्यु से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Immortal.

नास्य विद्यते यमो मृत्युः इति अयमः। अर्थात् भगवान् के लिए कोई यम अर्थात् मृत्यु नहीं है, अतः वे अयम हैं। जिसका भी जन्म होता है, उसकी मृत्यु अवश्यंभावि होती है। यमराज मृत्यु के देवता हैं और यम मृत्यु को बोलते हैं। परमात्मा का न जन्म होता है, अतः उनका यम अर्थात् मृत्यु भी नहीं होती है। इसलिए वे यम कहलाते हैं।

उन मृत्यु से रहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८६७ -

ॐ सत्त्ववते नमः

पराक्रमी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supremely Courageous.

शौर्यवीर्यादिकं सत्त्वमस्येति सत्त्ववान्। अर्थात् भगवान् में शूरता-पराक्रम आदि सत्त्व हैं, इसलिए वे सत्त्ववान् हैं। शूरता और पराक्रम वहीं पर पूर्ण मात्रा में होते है, जहां पर किसी प्रकार का भय नहीं होता है। भगवान् पूर्णस्वरूप, मुक्त होने से उन्हें न किसी चीज के पानेका वा खोने का भय होता है। इसलिए उनमें सृष्टि के कल्याण हेतु कुछ भी करने में किसी प्रकार का भय वा संकोच का अभाव होता है। इस प्रकार उनका शौर्य प्रदर्शित होता है। इसलिए वे पराक्रमी अर्थात् सत्त्ववान् कहलाते हैं। उन पराक्रमी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८६८ -

ॐ सात्त्विकाय नमः

सात्त्विक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Sattvic.

सत्त्वे गुणे प्राधान्येन स्थित इति सात्त्विकः। अर्थात् सत्त्वगुणमें प्रधनता से स्थित हैं, इसलिए वे सात्त्विक हैं। भगवान् में सत्त्वगुण के सभी लक्षण पूर्णमात्रा में विराजमान है। वे शान्त, कृतार्थ, प्रसन्न और समत्व से युक्त है। सत्त्वगुण की प्रधानता से ही सृष्टि का सुन्दर रूप से संचालन और व्यवस्था सम्भव होती है। उन सबके पीछे हेतु सत्त्वगुण का प्रधान लक्षण ज्ञान हैं। वे अपनी वास्तविकता के ज्ञान से युक्त हैं। एवं उनमें सत्वगुण पूर्णमात्रा में व्यक्त है। इसलिए वे सात्विक कहलाते हैं। उन सात्त्विक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८६९ –

ॐ सत्याय नमः

सत्य स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Truth.

त्रिकाले अपि तिष्ठति इति सत्; सत्स्वरूपात् सत्यः। अर्थात् जो तीनों कालों में रहता हैं, वह सत् है। सत्स्वरूप होने से वे सत्य कहलाते हैं। परमात्मा सत्यस्वरूप तत्त्व हैं। क्योंकि वे जन्म–मृत्यु से परे होने से तथा उनसे भिन्न किसी भी अन्य वस्तु का अस्तित्व नहीं होने से उनका अस्तित्व सदैव – भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों में रहता है। अतः वे सत्य स्वरूप कहलाते हैं।

उन सत्य स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
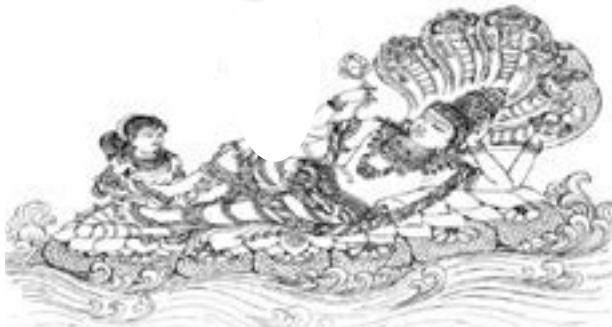
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८७० -

ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः

सत्य और धर्ममें परायण परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Abode of Truth & Rightousness.

सत्ये यथाभूतार्थकथने धर्मे च चोदनालक्षणे नियत इति सत्यधर्मपरायणः। अर्थात् वे सत्य अर्थात् यथार्थ–भाषणमें और विधिरूप धर्ममें नियत हैं, इसलिए सत्य–धर्मपरायण हैं। भगवान् के वचन सत्य के ही आश्रित होने से उनके वचनों में सदैव सत्य का ही समावेश होता है। तथा उनके कर्म भी धर्म के अनुरूप और धर्म की संस्थापना के लिए ही होते है, उससे विपरीत नहीं। इसलिए वे सत्यधर्मपरायण कहे जाते हैं। उन सत्य और धर्म में परायण परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८७१ -

ॐ अभिप्रायाय नमः

जीवोंकी आकांक्षारूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Sought by Sadhakas.

अभिप्रेयते पुरुषार्थकांक्षिभिः आभिमुख्येन इति अभिप्रायः। अर्थात् पुरुषार्थ के इच्छुक पुरुष भगवान् का अभिप्राय अर्थात् आकांक्षा रखते है, इसलिए वे अभिप्राय हैं। प्रत्येक व्यक्ति सुखकी प्राप्तिकी इच्छासे प्रेरित होकर पुरुषार्थ करता है। उनकी समस्त कामनाओंके पीछे मूलभूत कामना परं आनन्दकी प्राप्तिकी ही होती है। परमात्मा स्वयं ही आनन्दस्वरूप होनेसे जाने-अन्जाने प्रत्येक व्यक्तिका अभिप्राय अर्थात् मूल आकांक्षा परमात्माकी ही प्राप्ति है। इसलिए वे अभिप्राय कहलाते हैं। उन जीवोंकी आकांक्षारूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८७२ –

ॐ प्रियार्हाय नमः

परं प्रेमके योग्य परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Lovable.

प्रियाणि इष्टानि अर्हति इति प्रियार्हः। अर्थात् प्रिय वस्तु निवेदन करने योग्य है, इसलिए प्रियार्ह है। प्रत्येक जीवको आनन्द प्रिय होता है तथा वह आनन्दकी प्राप्ति हेतु ही विविध पुरुषार्थका आश्रय लेता है। वास्तविक आनन्द के स्रोत स्वयं परमात्मा हैं, क्योंकि वे ही आनन्दस्वरूप हैं। अतः सर्वाधिक प्रिय, प्रेम करनेयोग्य स्वयं परमात्मा ही हैं। इसलिए वे प्रियार्ह कहलाते हैं।

उन परं प्रेमके योग्य परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८७३ -

ॐ अर्हाय नमः

सर्वाधिक पूजनीय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Worthy of Worship.

स्वागतासनप्रशंसा–अर्घ्यपाद्यस्तुति नमस्कारादिभिः पूजासाधनैः पूजनीय इति अर्हः। अर्थात् भगवान् स्वागत, आसन, प्रशंसा, अर्घ्य, पाद्य, स्तुति और नमस्कार आदि पूजाके साधनोंसे पूजनीय हैं, इसलिए अर्ह हैं। भगवान् समस्त गुणोंके धाम, शक्तियोंके पूंज, सम्पूर्ण ज्ञान की निधि हैं। समस्त ऐश्वर्य के वास्तविक स्रोत वे ही हैं। इसलिए वे सर्वाधिक पूजनीय हैं। अतः वे अर्ह कहलाते हैं।

उन सर्वाधिक पूजनीय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८७४ -

ॐ प्रियकृते नमः

भक्तोंका प्रिय करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Benefactor.

न केवलं प्रियार्ह एव, किन्तु स्तुत्यादिभिः भजतां प्रियं करोति इति प्रियकृत्। अर्थात् केवल प्रियार्ह ही नहीं हैं, बल्कि स्तुति आदि के द्वारा भजनेवालों का प्रिय करते हैं, इसलिए प्रियकृत् भी हैं। भगवान् प्रियार्ह अर्थात् प्रेम करनेयोग्य तो है ही। साथ ही वे उनका भजन करनेवाले भक्तों को भक्ति का प्रसाद प्रदान करके उनको प्रसन्न भी करते हैं, इसलिए वे प्रियकृत कहलाते हैं। सबका प्रिय करनेवाले उन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८७५ –

ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः

भक्तोंमें प्रीति बढ़ानेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is The Exhilarating Joy (in Devotees).

भक्तानां प्रीतिं वर्धयति इति प्रीतिवर्धनः। अर्थात् भक्तों की प्रीति भी बढ़ाते हैं, इसलिए वे प्रीतिवर्धन हैं। भक्त को भगवान् प्रिय होते हैं। भगवान् के प्रति प्रेम की वजह से जैसे जैसे उनका भजन करता है, वैसे वैसे वह भगवान् की और भी महिमा से अवगत होता जाता है। भगवान् की महिमा का ज्ञान उनमें सतत प्रेम में वृद्धि करने का कारण बनता है। इसलिए परमात्मा प्रीतिवर्धन कहे जाते हैं।

उन भक्तके हृदयमें प्रेममें वृद्धि करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८७६ -

ॐ विहायसगतये नमः

आकाश में विचरण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One Who Traverses the Sky.

विहायसं गतिः आश्रयो अस्य इति विहायसगतिः, विष्णुपदं आदित्यो वा। अर्थात् जिसकी गति अर्थात् आश्रय विहायस अर्थात् आकाश हैं, उस विष्णुपद अथवा आदित्यरूप से भगवान् विहायसगति हैं। विहायस आकाशको बोलते है, उसमें गति अर्थात् भ्रमण करनेवाले सूर्यदेव को विहायसगति कहा जाता है। सूर्यदेवता भगवान् की महान् विभूतियों में से एक हैं, अतः भगवान् स्वयं ही आकाशमें गमन करनेवाले सूर्य हैं। उन सूर्यरूप से आकाशमें गमन करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
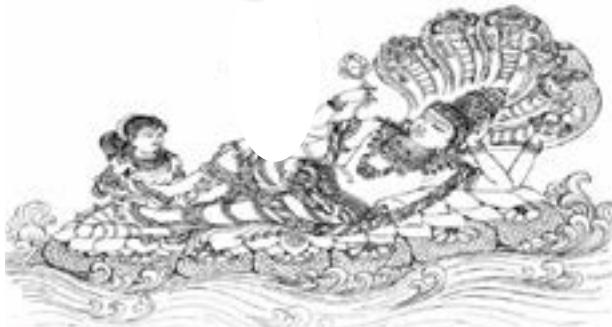
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८७७ -

ॐ ज्योतिषे नमः

ज्योतिस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Self-effulgent.

स्वतः एव द्योतते इति ज्योतिः, 'नारायणपरो ज्योतिरात्मा' इति मन्त्रवर्णात्। अर्थात् स्वयं ही प्रकाशित होते हैं, इसलिए वे ज्योति हैं, जैसा कि मंत्रवर्ण कहता है कि, 'नारायण परं ज्योति हैं, नारायण आत्मा हैं।' ज्योति अर्थात् स्वयं प्रकाशस्वरूप, जिसे जाननेके लिए अन्य प्रकाश वा साधन की आवश्यकता नही होती है। इस प्रकार परमात्मा स्वयं प्रकाशित होनेसे वे ज्योति कहलाते हैं। उन ज्योतिस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८७८ –

ॐ सुरुचये नमः

सुन्दर संकल्पवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Auspicious Desire.

शोभना रुचिः दीप्तिः इच्छा वा अस्येति सुरुचिः। अर्थात् भगवान् की रुचि – दीप्ति अथवा इच्छा सुन्दर है, इसलिए वे सुरुचि हैं। समस्त सृष्टि बहुत ही सुन्दर, अपने आपमें सम्पूर्ण, अद्‌भुत है। यह सृष्टि आनन्दस्वरूप परमात्माके ही संकल्परूपा है। सृष्टि के निर्माण के पीछे जीवों की वासना तथा कर्मफल प्रदान करने रूप उदात्त संकल्प है। ऐसे सुन्दर संकल्प से युक्त होने के कारण परमात्मा सुरुचि कहलाते हैं। उन सुन्दर संकल्पवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८७९ -

ॐ हुतभुजे नमः

आहुतियां ग्रहण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is Consumer of Oblations.

समस्त देवता-उद्देशेन प्रवृत्तेषु अपि कर्मसु हुतं भुंक्ते भुनक्ति इति वा हुतभुक् अर्थात् समस्त देवताओं के उद्देश्य से भी किये हुए कर्मों में आहुतियों को स्वयं भोगते हैं, इसलिए हुतभुक् हैं। यज्ञकर्म में देवताओं के प्रति आहुतियां दी जाती है। परमात्मा ही सब की आत्मा होने से समस्त देवताओं में भोक्तारूप से परमात्मा ही स्थित रहकर उन आहुतियों को मानों ग्रहण करते हैं। इसलिए वे हुतभुक् कहलाते हैं। उन आहुतियों को ग्रहण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८८० -

ॐ विभवे नमः

सर्वव्यापी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All Pervading.

सर्वत्र वर्तमानत्वात्, त्रयाणां लोकानां प्रभुत्वाद् विभुः। अर्थात् सर्वत्र वर्तमान होने तथा तीनों लोकों के प्रभु होने के कारण वे विभु हैं। परमात्मा स्वयं देश, काल, वस्तु की सीमाओं से रहित है। इसलिए समस्त देश आदि को व्याप्त करके, उनसे परे स्थित हैं। अतः वे सर्वव्यापी विभु कहलाते हैं।

उन सर्वव्यापी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८८१ -

ॐ रवये नमः

रसको ग्रहण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is Absorber of Vapours.

रसान् आदत्ते इति रविः आदित्यात्मा। 'रसानां च तथा आदानाद् रविः इत्यभिधीयते।।' इति विष्णुधर्मोत्तरे। अर्थात् रसों को ग्रहण करते हैं, इसलिए सूर्यरूप भगवान् रवि हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराणमें कहा है - रसोंका ग्रहण करनेके कारण रवि कहलाते हैं।' भगवान् आकाशमें सूर्यरूपसे स्थित रहकर अन्तरिक्षमें अपनी किरणोंको फैलाकर मानों पृथ्वीसे जलरूप रसको ग्रहण करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वर्षा होती है। इस प्रकार रसको ग्रहण करनेवाले रवि अर्थात् सूर्य स्वयं परमात्मा ही हैं। सूर्यरूपसे रसको ग्रहण करनेवाले उन परमात्माको सादर नमन।

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८८२ -

ॐ विरोचनाय नमः

विविध रूपोंमें सुशोभित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Variegated Splendour.

विविधं रोचते इति विरोचनः। अर्थात् विविध प्रकार से सुशोभित होते हैं, इसलिए विरोचन हैं। भगवान् स्वयं अरूप हैं, इसलिए भक्तों की प्रसन्नता हेतु भक्तको जो भी रूप प्रिय लगें, उस रूपमें वे प्रस्तुत होकर उन्हें अनुगृहीत करते हैं। इस प्रकार वे विविध रूपोंमें शोभायमान होनेके कारण विरोचन कहलाते हैं।

उन विविध रूपोंमें सुशोभित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८८३ –

ॐ सूर्याय नमः

सूर्यरूपसे स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Sun.

सूते श्रियमिति सूर्यो अग्निर्वा सूर्यः। अर्थात् श्री (शोभा)को जन्म देते हैं, इसलिए वे सूर्य वा अग्नि हैं। समस्त प्रकृति और प्राणी जगत सूर्यदेवताके आगमनसे प्रफुल्लित होता हैं। सूर्योदयके साथ ही उनमें एक जीवन्तता व चेतनाका मानों संचार होता है। इस वजहसे प्रकृति आदि सुशोभित होती है। इस प्रकार परमात्मा ही सूर्यरूपसे समस्त ब्रह्माण्डको सुशोभित करते हैं। समस्त ब्रह्माण्डको सुशोभित करनेवाले उन सूर्यरूपसे स्थित परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८८४ –

ॐ सवित्रे नमः

सृष्टिका प्रसव करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Cause of the Universe.

सर्वस्य जगतः प्रसविता सविता; 'प्रजानां तु प्रसवनात् सवितेति निगद्यते' इति पुराणे। अर्थात् सम्पूर्ण जगतका प्रसव करनेवाले होनेसे भगवान् सविता हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में कहा है – 'प्रजाओंका प्रसव करनेसे आप सविता कहलाते हैं।' परमात्मा मायाशक्तिको धारण करके उनमें चेतनतारूप बीज प्रदान करते हैं। इससे ही समस्त सृष्टि उत्पन्न होती है। इस प्रकार वे समस्त जीवसृष्टिको उत्पन्न करनेमें निमित्त बनते हैं, इसलिए वे सविता कहलाते हैं। उन सृष्टिका प्रसव करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८८५ –

ॐ रविलोचनाय नमः

सूर्यरूप नेत्रवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one whose Eyes are the Sun.

रविः लोचनं चक्षुः अस्येति रविलोचनः; 'अग्नि–मूर्धा चक्षूषी चन्द्रसूर्यौ' इति श्रुतेः। अर्थात् रवि भगवान्‌का लोचन अर्थात् नेत्र है, इसलिए वे रविलोचन हैं। श्रुति कहती है – अग्नि उसका सिर है, तथा सूर्य और चन्द्र उसके नेत्र हैं।' यह समस्त सृष्टि परमात्माका विराट शरीर है। जिस प्रकार व्यष्टिशरीरमें मस्तक, नेत्र आदि रूप अंग होते है, वैसे ही समष्टि धरातल पर सूर्य परमात्माका नेत्र हैं। उसीसे मानों वे सृष्टिको देखते हैं। इसलिए वे रविलोचन हैं। उन सूर्यरूप नेत्रवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८८६ –

ॐ अनन्ताय नमः

अन्तरहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One Who is Endless.

नित्यत्वात् सर्वगतत्वाद् देशकालपरिच्छेदाभावात् अनन्तः। अर्थात् नित्य, सर्वगत और देशकाल परिच्छेदका अभाव होनेके कारण भगवान् अनन्त हैं। परमात्मा समस्त देश, कालसे परे हैं। उनमें न देशतः सीमाएं है और न कालतः। इस प्रकार उनका देश, कालकी दृष्टिसे किसीभी प्रकारका अन्त नहीं होता है। इसलिए वे अनन्त कहलाते हैं।

उन अनन्तस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८८७ -

ॐ हुतभुजे नमः

आहुति ग्रहण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Consumer of Oblations.

हुतं भुनक्ति इति हुतभुक्। अर्थात् हवन किए हुएको भोगते हैं, इसलिए वे हुतभुक् हैं। अनन्तस्वरूप परमात्मा ही समस्त नाम-रूपात्मक जगतकी तरह अभिव्यक्त हैं, वे ही सबकी आत्माकी तरह स्थित रहकर मानों सब कार्य करते हैं। जो यज्ञकी पवित्र अग्निमें देवताओंको आहुति प्रदान की जाती हैं, उन देवताकी आत्माकी तरह स्थित परमात्मा ही मानों आहुतियोंको ग्रहण करते हैं, इसलिए वे हुतभुक् कहलाते हैं। उन यज्ञकी आहुतियोंको ग्रहण करनेवाले परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८८८ -

ॐ भोक्त्रे नमः

भोक्तारूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Enjoyer.

प्रकृतिं भोग्यान् अचेतनां भुंक्ते इति भोक्ता। अर्थात् भोग्यरूपा अचेतन प्रकृतिको भोगते हैं, इसलिए भोक्ता हैं। परमात्मा ही जीवरूपसे स्थित रहकर जगतके शरीर, इन्द्रियां, अन्तःकरणादि रूप उपाधियोंके द्वारा स्थूल, सूक्ष्म आदि जड़ विषयोंके भोक्ता बनते हैं। इसलिए वे भोक्ता कहलाते हैं।

उन जीवरूपसे स्थित रहकर भोग करनेवाले भोक्तारूप परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८८९ –

ॐ सुखदाय नमः

मोक्षरूप सुख देकरनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is Bestower of Bliss.

भक्तानां सुखं मोक्षलक्षणं ददाति इति सुखदः। अर्थात् भक्तोंको मोक्षरूप सुख देते हैं, इसलिए वे सुखद हैं। भगवान्के प्रति जो अनन्य भक्तिसे युक्त होता है, उन्हें गुरुरूपमें आकर बुद्धियोग अर्थात् आत्मज्ञान देनेके द्वारा अनुगृहीत करते हैं, जिसे प्राप्त करके वह परं सुखकी अवस्था अर्थात् मोक्षको प्राप्त करता हैं। इस प्रकार परमात्मा मोक्षविषयक ज्ञानके द्वारा अपने भक्तको परंसुख प्रदान करनेके कारण सुखद कहलाते हैं। उन मोक्षरूप सुखको प्रदान करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८९० –

ॐ नैकजाय नमः

अनेकों बार जन्म लेनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Multi-incarnate.

धर्मगुप्तये असकृत् जायमानत्वात् नैकजः। अर्थात् धर्मरक्षाके लिए बारम्बार जन्म लेने के कारण नैकज हैं। सृष्टिको सुचारुरूपसे संचालित करनेके लिए परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्तिको धारण करके अनेकों बार अवतार लेते हैं और अधर्मका नाश तथा धर्मको संस्थापित करते हैं। गीतामें भगवान् का वचन हैं कि, 'धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।' हम प्रत्येक युगमें धर्मकी संस्थापनाके लिए जन्म लेते हैं। इसलिए वे नैकज कहलाते हैं। उन अनेकों बार जन्म लेनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८९१ –

ॐ अग्रजाय नमः

सर्व प्रथम जन्मे परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is the First Born.

अग्रे जायते इति अग्रजः हिरण्यगर्भः 'हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे' इत्यादि श्रुतेः। अर्थात् सबसे आगे उत्पन्न होते हैं, इसलिए हिरण्यगर्भरूपसे अग्रज हैं। श्रुति कहती है – 'पहले हिरण्यगर्भ ही वर्तमान था।' समस्त सृष्टिकी उत्पत्ति परमात्मासे ही हुई है। सृष्टिकी मूर्तरूपमें अभिव्यक्तिके पूर्व परमात्मा में सृष्टि की पहले ही परिकल्पना वा संकल्प होता है, अर्थात् सृष्टिकी सर्वप्रथम अभिव्यक्ति संकल्परूप से होती है। इस संकल्पात्मक अभिव्यक्ति को ही अग्रज अथवा हिरण्यगर्भ कहते हैं। उन सर्वप्रथम हिरण्यगर्भ रूप से उत्पन्न परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८९२ -

ॐ अनिर्विण्णाय नमः

निरुत्साहिता से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Undejected.

अवाप्तसर्वकामत्वाद् अप्राप्ति हेतु अभावात् निर्वेदो अस्य नास्ति इति अनिर्विण्णः। अर्थात् सर्व कामनाएं प्राप्त होनेके कारण अप्राप्ति के हेतु का अभाव होने से परमात्मा में निरुत्साहिता नहीं है, इसलिए वे अनिर्विण्ण हैं। अपूर्ण जीव के संकल्प बाह्य उपलब्धि के माध्यम से पूर्ण होने के लिए होते है। कामना की पूर्ति होने पर अथवा प्रयास विफल होने पर उनमें शिथिलता व निरुत्साहिता होती है। किन्तु पूर्णस्वरूप परमात्मा की समस्त अभिव्यक्तियां आनन्द की अभिव्यक्तिरूपा होती है। अतः उनमें कभी भी निरुत्साहिता नहीं होती है। इसलिए वे अनिर्विण्ण हैं। उन निरुत्साहिता से रहित पूर्णकाम परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८९३ -

ॐ सदामर्षिणे नमः

करुणानिधान परमात्मा को नमस्कार।

I salute who is Ever-compassionate.

सतः साधून् आभिमुख्येन मृष्यते क्षमते इति सदामर्षी। अर्थात् साधुओं को अपने सम्मुख सहन करते अर्थात् क्षमा करते हैं, इसलिए वे सदामर्षी हैं। जिनका सहज स्वभाव सत्कर्म करना है, उन साधु के द्वारा अज्ञानवशात् कोई गलत कार्य होता है, तो परमात्मा उन्हें क्षमा कर देते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि उनके पीछे की भावना व प्रेरणा दूषित नहीं है। इस प्रकार साधूपुरुष के दोषों को क्षमा करनेवाले परमात्मा करुणा के सागर हैं। इसलिए वे सदामर्षी कहलाते हैं। उन करुणा के सागर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८९४ -

ॐ लोकाधिष्ठानाय नमः

जगत के अधिष्ठानभूत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Sole Substratum of the Universe.

तम् अनाधारम्-आधारम्-अधिष्ठाय त्रयो लोकाः तिष्ठन्ति इति लोकाधिष्ठानं ब्रह्म, अर्थात् निराधार ब्रह्म के आश्रय से तीनों लोक स्थित हैं, इसलिए वह लोकाधिष्ठान हैं। जिस प्रकार जल में अनेकों लहरें आश्रित होती है। लहर के अस्तित्व के लिए जल की आवश्यकता होती है, किन्तु जल का अस्तित्व लहर पर आश्रित नहीं है। उसी प्रकार परमात्मा में समस्त लोक आश्रित है। इसलिए वे लोकाधिष्ठान कहलाते हैं। उन समस्त जगत के अधिष्ठानभूत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८९५ –

ॐ अद्भुताय नमः

अद्भुत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Wonder.

अद्भुतत्वात् अद्भुतः। ‘श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः श्रृण्वन्तो अपि बहवो यं न विद्यु। आश्चर्यो वक्ता कुशलो अस्य लब्धा आश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः।।’ इति श्रुतेः। अर्थात् ‘जो बहुतों को सुनने को भी नहीं मिलता और बहुत से जिसे सुनकर भी नहीं जानते, उन ब्रह्म का वक्ता आश्चर्यरूप है तथा उसका लब्धा–समझने वाला भी कोई निपुण ही होता है। उन निपुण आचार्य से उपदेश पाकर उसे समझ लेने वाला भी आश्चर्यरूप ही है।’ इस श्रुति से उनका अद्भुतत्व ही द्योतित होता हैं। उनका स्वरूप, शक्ति, व्यापार और कार्य अद्भुत होने के कारण वे अद्भुत हैं। उन अद्भुत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८९६ -

ॐ सनाते नमः

चिरकालस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the One Who is the Eternal.

कालश्च परस्यैव विकल्पना कापि। 'परस्य ब्रह्मणो रूपं पुरुषः प्रथमं द्विज। व्यक्ताव्यक्ते तथैवान्ये रूपे कालस्तथापरम्।।' इति विष्णुपुराणे। अर्थात् सनात् चिरकालवाची शब्द है, काल भी परमात्माका ही एक विकल्प है; जैसा कि विष्णुपुराणमें कहा है – 'द्विज परब्रह्म का प्रथम रूप पुरुष है, अव्यक्त और व्यक्त उनके अन्यरूप हैं तथा काल उसका इतररूप है। एवं कालरूप से परमात्मा ही अभिव्यक्त है, अतः जो सनात् अर्थात् चिरकालस्वरूप है, वह परमात्मा ही हैं। उन चिरकालस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
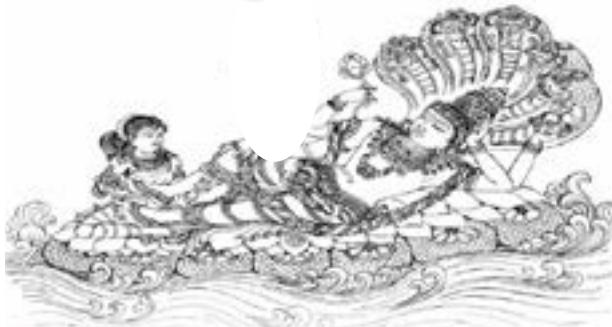
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८९७ -

ॐ सनातनतमाय नमः

ब्रह्माजीके भी कारणभूत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Most Ancient.

सर्वकारणत्वाद् विरिंचि आदीनामपि सनातनानाम् अतिशयेन सनातनत्वाद् सनातनतमः। अर्थात् सबके कारण होने से भगवान् ब्रह्मा आदि सनातनों से भी अत्यन्त सनातन होने के कारण सनातनतम है। ब्रह्माजी सबके कारण होने से वे सनातन हैं। किन्तु ब्रह्माजीकी भी उत्पत्ति परमात्मासे हुई है, तथा परमात्माकी उत्पत्ति किसीसे भी नहीं हुई है। इसलिए वे सनातनतम हैं।

उन सनातन ब्रह्माजीके भी कारण परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ८९८ -

ॐ कपिलाय नमः

रक्तवर्णवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Fiery

बडवानलस्य कपिलो वा इति तद्रूपी कपिलः। अर्थात् बडवानलका वर्ण कपिल अर्थात् लाल होता है; अतः बडवानलरूप भगवान् कपिल हैं। अग्निका प्रचण्डरूप ही बड़वानल कहा जाता है। यह प्रचण्डरूप परमात्माकी विभूतिस्वरूप है। वह रक्तवर्ण अर्थात् कपिल होती है, इसलिए परमात्माको रक्तवर्णवाले कपिल कहा जाता है।

उन रक्तवर्णा प्रचण्ड अग्निरूपसे स्थित परमात्माको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ८९९ –

ॐ कपये नमः

सूर्यरूपसे स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Who is the Sun.

कं जलं रश्मिभिः पिबन् कपिः सूर्यः इति। अर्थात् अपनी किरणोंसे 'क' अर्थात् जलको पीने के कारण सूर्यका नाम कपि है। सूर्य अपनी किरणोंसे पृथ्वी पर से जल का शोषण करके वर्षा करता हैं। इसलिए सूर्य को कपि कहा जाता है। सूर्य परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। जल का शोषण करनेवाला सूर्य अर्थात् कपि ही परमात्मा हैं।

उन सूर्यरूपसे स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ९०० –

ॐ अप्ययाय नमः

अप्ययस्वरूप परमात्माको नमस्कार।

I salute the one in Whom Entire Universe merges.

प्रलये अस्मिन्नपियन्ति जगन्ति इति अप्ययः। अर्थात् प्रलयकाल में जगत् भगवान् में अपगत अर्थात् विलीन होते हैं, इसलिए वे अप्यय हैं। जब सृष्टि का प्रलय हो जाता है, तब एक मात्र परमात्मा ही स्थित रहते है। समस्त जगत परमात्मा में ही विलीन हो जाता है, मानों परमात्मा इस जगत को पी जाते हैं। इसलिए वे अप्यय कहलाते हैं। प्रलयकाल में अपने अन्दर जगत को लीन करनेवाले उन परमात्मा को सादर नमन।